SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-03| March- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

अनूप कुमार
16—ऐ, केलाबाग चौराहा
बरेली (उत्तर प्रदेश)
Email: modernanoop@gmail.com

सारांश

वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं रह गया है बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी उतना ही आवश्यक माना जाता है। व्यक्तित्व निर्माण की इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्तिगत मूल्य व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण, निर्णय क्षमता तथा जीवन के लक्ष्यों को दिशा प्रदान करते हैं। ये मूल्य व्यक्ति में नैतिकता, अनुशासन, जिम्मेदारी, सहयोग, सहानुभूति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास करते हैं, जो उसे एक आदर्श नागरिक बनने में सहायता प्रदान करते हैं। विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण का प्रमुख केंद्र होता है जहाँ वे केवल विषयगत ज्ञान ही नहीं प्राप्त करते बल्कि सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी सीखते हैं। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है, क्योंकि इस अवस्था में उनके विचार, दृष्टिकोण तथा जीवन मूल्यों का तीव्र विकास होता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में बरेली जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शोध के लिए चयनित किया गया। अध्ययन के लिए कुल 200 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया, जिसमें हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के विद्यार्थी शामिल थे। आँकड़ों के संकलन के लिए व्यक्तिगत मूल्य मापनी का उपयोग किया गया, जिसका निर्माण डॉ. जी.पी. सैरी एवं प्रो. आर.पी. वर्मा द्वारा किया गया है। विद्यार्थियों से व्यक्तिगत संपर्क स्थापित कर प्रश्नावली के माध्यम से आवश्यक आँकड़ों का संकलन किया गया। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात की सहायता से किया गया, जिससे दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना की जा सके। अध्ययन के प्रमुख उद्देश्यों में हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों तथा छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना शामिल था। इसी आधार पर यह परिकल्पना की गई कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से यह पाया गया कि हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों के मध्यमान में कुछ अंतर अवश्य दिखाई देता है, किन्तु सांख्यिकीय दृष्टि से यह अंतर सार्थक नहीं है। इसी प्रकार छात्राओं के संदर्भ में भी दोनों माध्यमों के बीच प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता के निर्धारित

स्तरों (0.01 एवं 0.05) से कम पाया गया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है। अतः अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालय का शिक्षण माध्यम, चाहे वह हिंदी हो या अंग्रेजी, विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है। विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों के निर्माण में केवल भाषा का माध्यम ही निर्णायक कारक नहीं होता, बल्कि परिवार, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विद्यालय का वातावरण तथा शिक्षकों का मार्गदर्शन भी समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, और दोनों माध्यमों के विद्यालय विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण में समान रूप से योगदान देते हैं। यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यपरक शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करता है तथा शिक्षा व्यवस्था को अधिक संतुलित और प्रभावी बनाने के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करता है।

मुख्यशब्द : हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम, माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, व्यक्तिगत मूल्य

प्रस्तावना

वर्तमान युग तीव्र सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी परिवर्तनों का युग है। इन परिवर्तनों ने मनुष्य के जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा भी इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं है बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास करना भी है। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में उसके मूल्यों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मूल्य व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय, दृष्टिकोण तथा जीवन के लक्ष्य को दिशा प्रदान करते हैं इसीलिए शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का विकास अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

व्यक्तिगत मूल्य से अभिप्राय उन मान्यताओं, आदर्शों और सिद्धांतों से है जिनके आधार पर व्यक्ति अपने जीवन में सही–गलत, उचित–अनुचित तथा अच्छा–बुरा का निर्णय करता है। ये मूल्य व्यक्ति के जीवन में नैतिकता, अनुशासन, जिम्मेदारी, सहानुभूति, सहयोग, ईमानदारी, सहिष्णुता तथा आत्मनियंत्रण जैसे गुणों को विकसित करते हैं। व्यक्तिगत मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं और समाज में संतुलन तथा समरसता बनाए रखने में सहायक होते हैं इसलिए विद्यालयी शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में श्रेष्ठ मूल्यों का विकास करना है, जिससे वे एक आदर्श नागरिक बन सकें।

विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण का महत्वपूर्ण केंद्र होता है। विद्यालय का वातावरण, शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम, शिक्षक का व्यवहार तथा साथियों के साथ संबंध ये सभी तत्व विद्यार्थियों के मूल्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर का समय विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत संवेदनशील एवं निर्णायक चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी किशोरावस्था से युवावस्था की ओर अग्रसर होते हैं और उनके विचारों, दृष्टिकोण तथा जीवन मूल्यों का तेजी से विकास होता है। इस स्तर पर प्राप्त अनुभव तथा शिक्षा उनके व्यक्तित्व और भविष्य को गहराई से प्रभावित करते हैं।

भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में शिक्षा विभिन्न माध्यमों के द्वारा प्रदान की जाती है, जिनमें प्रमुख रूप से हिंदी माध्यम और अंग्रेजी माध्यम शामिल हैं। इन दोनों माध्यमों के विद्यालयों में शिक्षण की भाषा, सांस्कृतिक परिवेश, पाठ्यक्रम की प्रस्तुति, शिक्षण–पद्धति तथा सामाजिक वातावरण में कुछ न कुछ अंतर पाया जाता है। हिंदी माध्यम के विद्यालय सामान्यतः स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक मूल्यों से अधिक जुड़े होते हैं, जबकि अंग्रेजी माध्यम

के विद्यालयों में वैश्विक दृष्टिकोण, आधुनिकता तथा प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। इन भिन्नताओं का प्रभाव विद्यार्थियों के विचारों, व्यवहारों और व्यक्तिगत मूल्यों पर भी पड़ सकता है।

आज के समय में अभिभावकों के बीच अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है क्योंकि इसे आधुनिकता, बेहतर अवसरों तथा उच्च शिक्षा से जोड़कर देखा जाता है। दूसरी ओर हिंदी माध्यम के विद्यालयों को स्थानीय भाषा और संस्कृति के संरक्षण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जाता है। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक–सांस्कृतिक अनुभवों में अंतर होने के कारण उनके व्यक्तिगत मूल्यों में भी भिन्नता होने की संभावना रहती है। इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि यह अध्ययन किया जाए कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में किस प्रकार की समानताएँ और भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

व्यक्तिगत मूल्यों का विकास अनेक कारकों से प्रभावित होता है, जैसे परिवार, समाज, संस्कृति, शिक्षा, मीडिया तथा साथियों का प्रभाव। परिवार से प्राप्त संस्कार विद्यार्थियों के मूल्यों की आधारशिला रखते हैं, जबकि विद्यालय उन मूल्यों को सुदृढ़ और व्यवस्थित रूप प्रदान करता है। शिक्षक अपने आचरण, शिक्षण–शैली और मार्गदर्शन के माध्यम से विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसी प्रकार विद्यालय का अनुशासन, सहशैक्षिक गतिविधियाँ, समूह कार्य तथा सामाजिक कार्यक्रम विद्यार्थियों में सहयोग, सहानुभूति और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का विकास करते हैं।

आधुनिक समाज में भौतिकता, प्रतिस्पर्धा और तकनीकी प्रगति के कारण जीवन–मूल्यों में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। कई बार यह चिंता व्यक्त की जाती है कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय संवेदनाओं में कमी आ रही है। ऐसी स्थिति में शिक्षा का दायित्व और भी बढ़ जाता है कि वह विद्यार्थियों को केवल बौद्धिक रूप से ही नहीं बल्कि नैतिक और सामाजिक रूप से भी सुदृढ़ बनाए। इसके लिए यह समझना आवश्यक है कि विभिन्न शैक्षिक माध्यमों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के मूल्यों की स्थिति क्या है और उनमें किस प्रकार के अंतर पाए जाते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान समय में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रह गई है बल्कि इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व और मूल्यों का निर्माण करना भी है। मूल्य व्यक्ति के जीवन को दिशा प्रदान करते हैं और उसके व्यवहार, निर्णय तथा सामाजिक संबंधों को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से विद्यार्थियों के जीवन में व्यक्तिगत मूल्यों का अत्यधिक महत्त्व होता है क्योंकि यही मूल्य उनके व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक आचरण, आत्मानुशासन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करते हैं। विद्यालयी शिक्षा इस प्रक्रिया का प्रमुख माध्यम है, जहाँ विद्यार्थी न केवल विषयगत ज्ञान प्राप्त करते हैं बल्कि जीवनोपयोगी मूल्यों को भी सीखते हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विभिन्न माध्यमोंकृविशेषकर हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यमकृके विद्यालयों का विस्तार हुआ है। इन दोनों माध्यमों के विद्यालयों में अध्ययन का वातावरण, पाठ्यक्रम की प्रस्तुति, सांस्कृतिक प्रभाव, शिक्षण–अधिगम की विधियाँ तथा सामाजिक परिवेश कई दृष्टियों से भिन्न हो सकते हैं। इस कारण यह संभावना रहती है कि इन दोनों माध्यमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में भी कुछ अंतर दिखाई दे।

आज के वैश्वीकरण और आधुनिकता के युग में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, जबकि हिंदी माध्यम के विद्यालय भी भारतीय संस्कृति, परंपरा और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐसे में यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि इन दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का स्वरूप कैसा है और उनमें किस प्रकार की समानताएँ अथवा भिन्नताएँ विद्यमान हैं। यदि दोनों

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

माध्यमों के विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है, तो उसके कारणों को समझना शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और संतुलन स्थापित करने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि व्यक्तिगत मूल्य ही विद्यार्थियों के भविष्य के नागरिक जीवन, सामाजिक व्यवहार और नैतिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

इसके अतिरिक्त यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षा–नीति निर्माताओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि किस प्रकार का शिक्षण वातावरण और शैक्षिक माध्यम विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों के विकास में अधिक प्रभावी भूमिका निभाता है। इस अध्ययन के माध्यम से यह भी ज्ञात किया जा सकता है कि क्या भाषा का माध्यम वास्तव में विद्यार्थियों के मूल्य निर्माण को प्रभावित करता है या नहीं। यदि किसी माध्यम में मूल्यों का विकास अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक पाया जाता है, तो उसके आधार पर अन्य विद्यालयों में भी उपयुक्त शैक्षिक रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं।

अतः हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से आवश्यक है बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, संतुलित और मूल्यपरक बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है तथा विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए उपयोगी दिशा प्रदान कर सकता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

खमीर, सिद्यंल (2017) ने बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन में रायपुर शहर के शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में से 50 बी. एड. प्रशिक्षित एवं 50 बी. एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों का चयन उद्देश्यपूर्ण विधि के द्वारा किया गया है। **परिणाम एवं व्याख्या –** प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि बी.एड. प्रशिक्षित तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों में कुछ समानताएँ तथा कुछ भिन्नताएँ पाई गई हैं। धार्मिक मूल्य के संदर्भ में यह पाया गया कि बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ औसत स्तर से कम पर प्राप्त हुईं जबकि बी.एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ उच्च स्तर से अधिक पर प्राप्त हुईं। तथापि सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि बी.एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों के विभिन्न स्तरों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। सामाजिक मूल्य के संदर्भ में बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ औसत स्तर पर प्राप्त हुईं जबकि बी.एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ उच्च स्तर पर पाई गईं किंतु सांख्यिकीय परीक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि दोनों समूहों के सामाजिक मूल्यों के विभिन्न स्तरों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। आर्थिक मूल्य के संबंध में परिणामों से ज्ञात हुआ कि बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ उच्च स्तर से अधिक पर प्राप्त हुईं जबकि बी.एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ औसत स्तर से कम पर पाई गईं। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि आर्थिक मूल्यों के विभिन्न स्तरों में बी.एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों में आर्थिक मूल्य, अप्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अधिक विकसित हैं। इसी प्रकार ज्ञानात्मक मूल्य के संदर्भ में बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ उच्च स्तर से अधिक पर प्राप्त हुईं जबकि बी.एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों की सर्वाधिक आवृत्तियाँ औसत स्तर से कम पर पाई गईं। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि ज्ञानात्मक मूल्यों के विभिन्न स्तरों में दोनों समूहों के बीच सार्थक अंतर पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्य, बी.एड. अप्रशिक्षित शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाए जाते हैं।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

ज्योति एवं शर्मा (2018) ने लधु एवं बृहद परिवारों की छा़त्राओं के पारिवारिक संबधों का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार के अनुसंधान की सर्वेक्षणात्मक विधि द्वारा किया गया था जिसमें न्यादर्श के रुप में गाजियाबाद जनपद के कक्षा 11 के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। विद्यार्थियों को लिंग के आधार पर आधा–आधा रखते हुये 600 विद्यार्थियों को यादृच्छिक रुप से चयनित करके किया गया था। आँकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण व्यक्तिगत मूल्यों मापनी द्वारा किया गया था। **अध्ययन निष्कर्ष –** लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी सृजनात्मकता पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि आज के इस आधुनिक युग में घटते हुए परिवारों के सदस्य अपने व्यस्त जीवन के कारण छात्रों की सृजनशीलता पर अधिक ध्यान नहीं दे पाते। जिसके कारण जो छात्राएं सृजनशील है। लघु परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है और उनके परिवार की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव से अध्ययन से जो परिणाम प्राप्त हुये। उनसे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार में सदस्यों की कमी होने के कारण माता–पिता का पूर्ण ध्यान छात्रों पर केंद्रित होता है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहायता प्रदान करता है और वह अपने पारिवारिक संबंधों को मजबूत भी बनाने में सहायक है। बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव पड़ता है उनके प्राप्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बृहद परिवारों के माता–पिता अधिक समय छात्राओं को नहीं दे पाते क्योंकि परिवार बड़ा होता है तो जिम्मेदारी के कारण वह ध्यान नही दे पाते। बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबंधों का उनकी व्यक्तिगत मूल्यों पर प्रभाव के परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार की मुखिया की जिम्मेदारी होती है कि वह परिवार सभी सदस्यों की भावनाओं का, शारीरिक गुणों का, मानसिक गुणों का विकास करें चाहे वह सदस्य छोटा हो या बड़ा इसी प्रकार उनके व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान कर व्यक्तिगत गुणों को विकसित करने की क्षमता परिवार के मुखिया में होनी चाहिए जिसका प्रभाव छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों पर पड़ता है।

परिहार, खान (2020) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यक्तिगत मूल्य, अध्ययन आदतों और आकांक्षा स्तरों का विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध में राजस्थान के मरू भाग, मैदानी भाग व पहाड़ी भाग से प्रत्येक भाग के 8–8 उच्च माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है। राजस्थान के मरु भाग के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों व राजस्थान के मैदानी भाग के उच्च माध्यमिक प्राप्त अंकों से 'टी' मान 0.21 प्राप्त हुआ। जोकि स्वातंत्रय की संख्या 798 के आधार पर साथर्कता स्तर 0.05 मान क्रमशः 1.962 व 2.592 से कम है। अतः निष्कर्षतः कहा जाता है कि दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परि 'राजस्थान के मरु भाग के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के आकाक्षा स्तर की राजस्थान के मैदानी भाग के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के आकांक्षा स्तर में तुलनात्मक अन्तर नहीं है। मरु भाग के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के आकांक्षा स्तर की राजस्थान के पहाड़ी भाग के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के आकाक्षा स्तर में तुलनात्मक अन्तर नहीं है। उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के आकांक्षा स्तर की राजस्थान के पहाड़ी भाग के उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षार्थियों के आकाक्षा स्तर में तुलनात्मक अन्तर नहीं है।

समस्या कथन

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

चरों का परिभाषीकरण

- **हिंदी माध्यम :–** हिंदी माध्यम से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जहाँ शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया मुख्यतः हिंदी भाषा के माध्यम से संचालित की जाती है। ऐसे विद्यालयों में पाठ्य–पुस्तकों, शिक्षण सामग्री, कक्षा शिक्षण, परीक्षा एवं अन्य शैक्षिक क्रियाओं में हिंदी भाषा का प्रयोग प्रमुख रूप से किया जाता है। प्रस्तुत शोध में हिंदी माध्यम से आशय उन माध्यमिक विद्यालयों से है जहाँ विद्यार्थी अपनी पढ़ाई हिंदी भाषा के माध्यम से करते हैं।
- **अंग्रेजी माध्यम :–** अंग्रेजी माध्यम से आशय उन विद्यालयों से है जहाँ शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया का मुख्य माध्यम अंग्रेजी भाषा होती है। इन विद्यालयों में अधिकांश विषयों का अध्यापन, पाठ्य–पुस्तकें, परीक्षाएँ तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियाँ अंग्रेजी भाषा में सम्पन्न होती हैं। प्रस्तुत शोध में अंग्रेजी माध्यम से अभिप्राय उन माध्यमिक विद्यालयों से है जिनमें विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अध्ययन करते हैं।
- **माध्यमिक विद्यालय :–** माध्यमिक विद्यालय वे शैक्षिक संस्थान हैं, जहाँ विद्यार्थी कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा ग्रहण करते हैं। ये विद्यालय विद्यार्थियों को केवल अकादमिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध में यह संदर्भ मुख्य रूप से उन विद्यालयों के लिए है जहाँ हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों में पढ़ाई होती है।
- **विद्यार्थी :–** विद्यार्थी से तात्पर्य उस शिक्षार्थी से है जो किसी विद्यालय या शैक्षणिक संस्था में औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर रहा होता है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी से अभिप्राय उन बालक–बालिकाओं से है जो हिंदी तथा अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हैं और शोध के लिए चयनित किए गए हैं।
- **व्यक्तिगत मूल्य :–** व्यक्तिगत मूल्य से तात्पर्य उन आदर्शों, मान्यताओं और सिद्धांतों से है जो व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय, दृष्टिकोण तथा जीवन शैली को प्रभावित करते हैं। ये मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व, नैतिकता, आत्म–अनुशासन, जिम्मेदारी, ईमानदारी तथा सामाजिक व्यवहार को दिशा प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोध में व्यक्तिगत मूल्य से आशय उन मूल्यों से है जिनका मापन चयनित विद्यार्थियों में उपयुक्त मापन उपकरण के माध्यम से किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

आँकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए बरेली जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श वर्तमान शोध हेतु बरेली जनपद में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के 200 विद्यार्थियों का चयनस्तरीकृत यादृच्छिक विधि द्वारा किया जायेगा जिसमें प्रथम स्तर पर विद्यालयों का चयन एवं द्वितीय स्तर पर विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

© Shiksha Samvad| Received: 03 March-2026 | Accepted: 10 March- 2026 | Published: 15 March- 2026

उपकरण

व्यक्तिगत मूल्य मापनी :– डा0 जी0पी0 सैरी एवं प्रो0 आर0पी0 वर्मा द्वारा निर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
हिंदी माध्यम	50	48.12	13.98	1.25	***
अंग्रेजी माध्यम	50	47.99	14.12		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य को दर्शाया गया है। तालिका में हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 48.12 एवं 13.98 प्राप्त हुआ है जबकि अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 47.99 एवं 14.12 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.25 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं 0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

छात्राऐं	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
हिंदी माध्यम	50	47.18	14.99	1.11	***
अंग्रेजी माध्यम	50	49.15	14.16		

0.01*सार्थक 0.05**सार्थक, ***सार्थक नहीं

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य को दर्शाया गया है। तालिका में हिंदी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 47.18 एवं 14.99 प्राप्त हुआ है जबकि अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 49.15 एवं 14.16 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 1.11 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता के दोनों स्तर (0.01 एवं

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

0.05) से कम है। कम सार्थकता स्तर दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। इससे सिद्ध होता है कि हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
- हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पारीख एवं सालवी (2018) : उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले आदिवासी तथा गैर आदिवासी विधार्थियों के मनवाधिकार मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन, P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980, VOL-3, ISSUE-6, September- 2018 E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation.
- खमीर, सिद्यंल (2017) : बी. एड. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन, ISSN Print: 2394-7500 ISSN Online: 2394-5869 Impact Factor: 5.2 IJAR 2017; 3(10): 232-236 www.allresearchjournal.com
- ज्योति एवं शर्मा (2018) : लधु एवं बृहद परिवारों की छात्राओं के पारिवारिक संबधों का उनके व्यक्तिगत मूल्यों, एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, 2018 IJSRST, Volume 4, Issue 2, Print ISSN: 2395-6011, Online ISSN: 2395-602X.

Cite this Article:

अनूप कुमार, **"हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन"** *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 03, pp.84-91, March-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/*

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

अनूप कुमार

For publication of research paper title

हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-03, Month March 2026, Impact Factor-RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/